योस्ही की दावत

योस्ही की दावत

कई वर्ष पहले येडो नगर में एक पंखे बनाने वाला रहता था जिसका नाम योस्ही था. उसे भुनी हुई ईल मछलियाँ बहुत अच्छी लगती थीं.

योस्ही के घर के पास साबू रहता था. साबू पूरे नगर में ईल मछलियाँ सबसे अच्छी भूनता था. उन मछलियों की गंध बहुत लुभावनी होती थी. लेकिन उसके ग्राहक बहुत थोड़े थे क्योंकि उसकी हिबाची पर पहुंचना सरल न था, वह नगर के बाहर एक छोटी सी गली में थी.

हर रात योस्ही अपने पड़ोसी साबू को देखता जब वह मछलियाँ पकड़ने के लिए घर से जाता.

हर दिन योस्ही साबू को मछलियाँ भूनते हुए और फिर ग्राहकों की प्रतीक्षा |करते हुए देखता.

और हर शाम योस्ही निराश साबू को बची हुई ईल मछलियाँ खाते हुए देखता.

"मछलियाँ भूनने वाले को बची हुई मछलियाँ अपने पड़ोसी के साथ बाँट कर खानी चाहिए," योस्ही बुदबुदाया.

"पंखे बनाने वाले को अपने पड़ोसी से मछलियाँ खरीदनी चाहिए," साबू ने शिकायत करते हुए कहा.

लेकिन योस्ही को पैसों की संदूक़ची में जमा पैसे की खनक इतनी अच्छी लगती थी कि वह साबू की मछलियाँ नहीं खरीदता था.

खाने के समय वह अकेले बैठ कर साबू की मछलियों की गंध सूँघते-सूँघते उबले हुए चावल खाता था. जिस चीज़ के लिए वह पैसे खर्च नहीं करना चाहता था, उसकी गंध को सूँघ कर वह आनंद लेता था.

योस्ही नाश्ते के समय भुनी हुई ईल सूँघता.
वह दुपहर में खाने के समय भुनी हुई ईल सूँघता.
और वह रात के खाने के समय भुनी हुई ईल सूँघता.
दिन-प्रतिदिन, योस्ही साबू की भुनी हुई ईल
अपने खाने के साथ सूँघता.

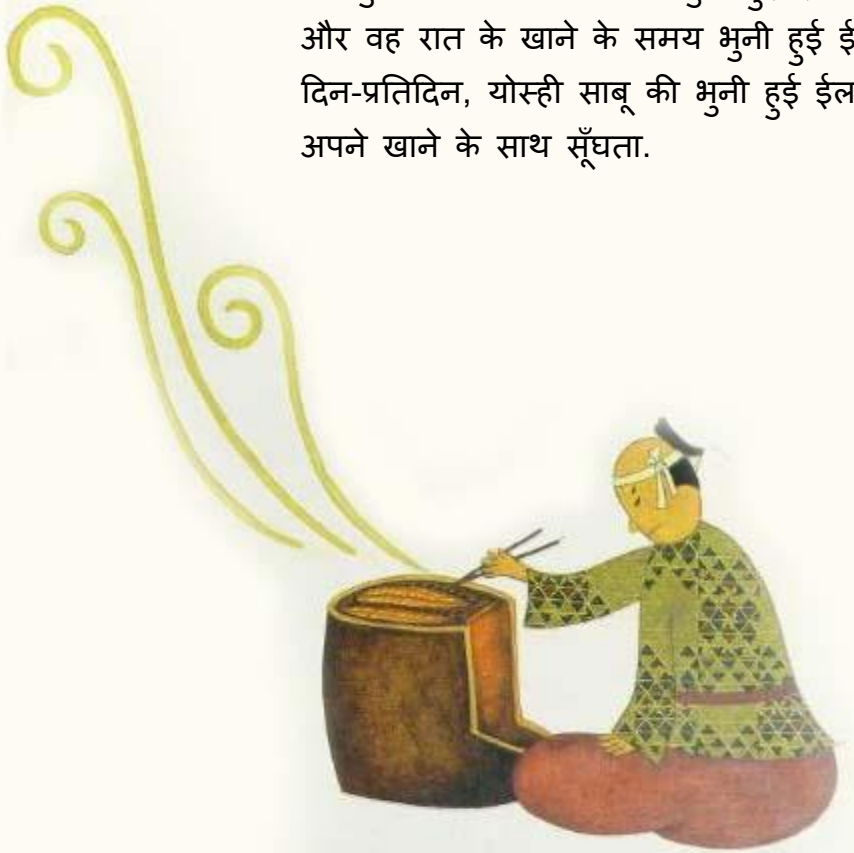

एक दिन योस्ही ने साबू से कहा, “मुझे प्रसन्नता है कि तुम ईल मछलियाँ भूनते हो, सम्मा जैसे बदबूदार मछलियाँ नहीं. तुम्हारी ईल मछलियों की सुगंध बहुत ही स्वादिष्ट होती है!”

साबू ने भौहें चढ़ा कर कहा, “तुम कब कुछ मछलियाँ खरीदोगे?”

“कभी नहीं!” योस्ही ने हवा सूँघते हुए चिल्ला कर कहा. “क्योंकि तुम्हारी मछलियों की स्वादिष्ट सुगंध के कारण मेरी पैसों की संदुकची हर दिन और भारी हो जाती है.”

“वह कैसे?” साबू ने पूछा.

“मेरे लिए तुम्हारी महँगी ईल मछलियों को सूँघना उन्हें खाने के समान ही है. खाने के लिए मैं सिर्फ चावल खरीदता हूँ.” योस्ही ने मुस्कराते हुए कहा. “तुम्हारी ईल मछलियों के कारण मैं हर भोजन के साथ और धनी हो जाता हूँ.”

साबू ने अपना पाँव पटका. “योस्ही, तुम्हारे कारण मैं निर्धन हूँ. जितनी मछलियाँ तुमने सूँघी हैं उनका मूल्य तुम मुझे दे देते तो पैसों की मेरी संदुकची भी भारी हो गई होती.”

इतना कह कर साबू ने गुस्से से एक बिल बनाया.

यह बिल उसने योस्ही को दिया और कहा, “पड़ोसी, जितनी भी भुनी हुई ईल मछलियाँ तुमने सूँघी हैं उनका मूल्य तुम्हें चुकाना पड़ेगा.”

योस्ही ने अपनी ठोड़ी को अंगुली से थपथपाया. “तुम ठीक कह रहे हो, साबू. यही न्यायोचित है. मैं अपनी पैसों की संदुकची लेकर आता हूँ.”

योस्ही धातु का बनी संदुकची लेकर साबू के घर आया और उसने ध्यान से सोने और चाँदी के सिक्के गिने.

“यह रहे वह पैसे जो तुम कहते हो कि मुझे तुम्हें देने हैं,” योस्ही बोला. लेकिन वह सिक्के साबू को देने के बजाय उसने वापस संदुकची में रख दिए.

फिर योस्ही ने संदुकची सिर के
ऊपर उठाई और उसे हिल्लाया.

खन खन खन खन
छन छन छन छन .

सिक्के खनखनाए.
योस्ही उनकी खनखनाहट पर नाचने लगा.

खन खन छन छन

वह गली में जाकर नाचने लगा.

खन छन छन

और वह साबू की हिबाची के चारों ओर नाचता रहा.

छन
छन खन खन
छन खन खन...

और वह साबू की हिबाची के चारों ओर नाचता रहा.

छन
छन खन खन
छन खन खन...

कुछ लोगों को सिक्कों की खनखनाहट सुनाई दी और वह दृश्य देखने के लिए वहाँ एकत्र हो गये. उन्होंने तालियाँ बजा कर जय-जयकार की. और लोग वहाँ आते गये जब तक कि.....

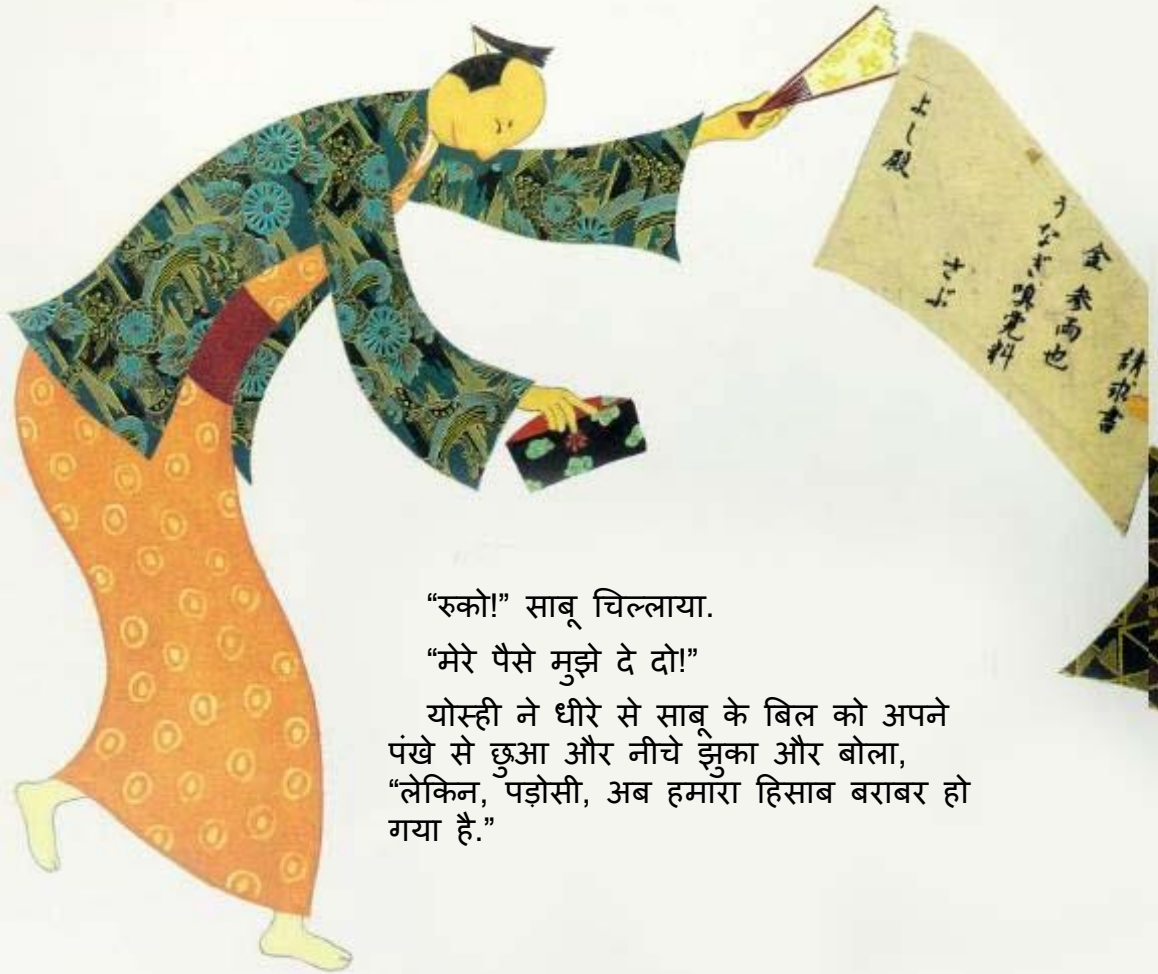

"रुको!" साबू चिल्लाया.

"मेरे पैसे मुझे दे दो!"

योस्ही ने धीरे से साबू के बिल को अपने पंखे से छुआ और नीचे झुका और बोला, "लेकिन, पड़ोसी, अब हमारा हिसाब बराबर हो गया है."

"क्या कहा?" साबू चिल्लाया. "क्या तुम मुझे मेरे पैसे न दोगे?"

"मैंने दे दिए हैं," योस्ही ने मुस्कराते हुए कहा.

"तुम अपनी ईल मछलियों की गंध के पैसे मुझ से मांग रहे हो और मैंने अपने पैसों की खनक सुना कर तुम्हारा बिल चुकता कर दिया है."

गुस्से से साबू का चेहरा लाल हो गया.

"योस्ही, तुम्हें इसका परिणाम भुगतना पड़ेगा."

उस शाम योस्ही प्रतीक्षा करता रहा कि साबू ईल पकड़ने जाएगा. लेकिन साबू घर से बाहर गया ही नहीं.

अगले दिन एक भयंकर बदबू ने योस्ही को चौंका दिया.

“कुसाई!” घर से दौड़ कर बाहर जाते हुए योस्ही चिल्लाया. लेकिन बाहर तो दुर्गंध और भी तीखी थी. साबू की हिबाची से घना धुआँ उठ रहा था.

"तुम क्या पका रहे हो?" योस्ही चिल्लाया.

"सारे नगर में दुर्गंध फ़ैल गई है."

"सम्मा." साबू ने हँसते हुए कहा. "क्या तुम्हें चाहिए?"

अब की बार योस्ही का चेहरा गुस्से से लाल हो गया.

"लेकिन सम्मा तो जापान में सबसे बदबूदार मछली है! मेरी भूख मिटाने की तुम ने हिम्मत कैसे की!"

इस बार साबू ज़ोर से हँसा.

"पड़ोसी, तुम्हें वही मिलता है जिसका तुम मूल्य चुकाते हो."

योस्ही घर के भीतर भागा. उसने शोजी परदे ऊपर कर दिए. उसने पंखे से बार-बार हवा की. लेकिन बदबूदार मछली की गंध कम न हुई.

योस्ही ने बदबूदार सम्मा को नाश्ते में सूंघा.

उसने बदबूदार सम्मा को दुपहर के खाने में सूंघा.

और उसने बदबूदार सम्मा को रात के खाने में सूंघा.

योस्ही ने उबले हुए चावल खाने का प्रयास किया. लेकिन मछली की बदबु के कारण उसके पेट में मरोड़ आने लगे.

फिर योस्ही को एक तरकीब सूझी.

अपनी नाक दबा कर योस्ही साबू के सामने झुका.

“पड़ोसी, मैं जानता हूँ कि हम में मतभेद रहे हैं, लेकिन मुझे लगता है कि हम उन्हें सुलझा सकते हैं.”

“किस प्रकार?” साबू ने पूछा.

“ज़रा थोड़ी सी ईल पकाओ. बाकी मुझ पर छोड़ दो और तुम्हें पता लग जाएगा,” योस्ही ने उत्तर दिया.

अगले दिन योस्ही ने अपना सबसे बढ़िया किमोनो पहना.

“ईल मछली!” साबू की हिबाची के निकट नाचते हुए योस्ही ने कहा.

भुनी हुई ईल मछलियों की सुगंध ने योस्ही को उत्साह से भर दिया. वह साबू की हिबाची के आसपास नाचता रहा.

छन खन खन....छन खन खन....

कई लोग वहाँ एकत्र हो गये और सिक्कों की खनखनाहट के साथ ताल मिलाकर तालियाँ बजाने लगे. नाचते-नाचते योस्ही ने आँख मारी और हँसा.

छन छन खन खन.....

वह घूमता रहा, उसके बाहें और टाँगें लहराती रहीं-एक इलेक्ट्रिक ईल की तरह.

छन खन खन.....

तेज़ और तेज़

छन छन
खन खन .....

ऊँचा, और ऊँचा

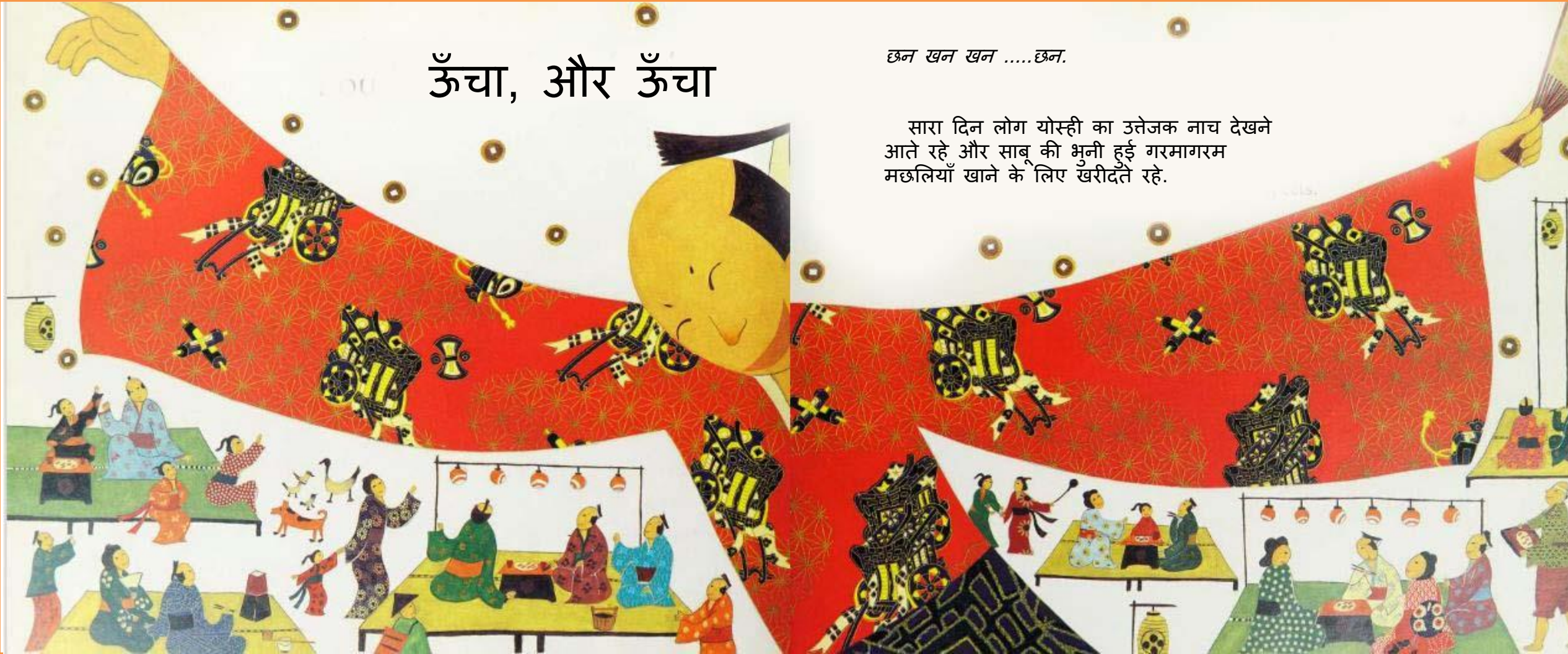

छन खन खन .....छन.

सारा दिन लोग योस्ही का उत्तेजक नाच देखने आते रहे और साबू की भुनी हुई गरमागरम मछलियाँ खाने के लिए खरीदते रहे.

दिन ढलने के बाद योस्ही ने उबले हुए चावल और ग्रीन चाय का अपना सामान्य खाना बनाया. जैसे वह अपना भोजन खाने के लिए बैठा, एक थाली में भुनी हुई मछलियाँ लेकर साबू आया.

“धन्यवाद, पड़ोसी, मेरे लिए ग्राहक लाने के लिए.”

“धन्यवाद,” योस्ही ने कहा, “लेकिन मैं तुम्हारा उपहार तभी स्वीकार करूंगा अगर तुम मेरे साथ भोजन करोगे.”

दोनों पड़ोसी खाने के लिए बैठ गये.

योस्ही ने एक बड़ी ईल उठाई और उसका एक बड़ा निवाला दांतों से काटा. वह मुस्कराया.

“म्म्म्म! मैं गलत था!” वह बोला. “भुनी हुई ईल को सिर्फ सूँघना उतना आनंददायक नहीं है जितना एक मित्र के साथ बैठ कर उसे खाना.”

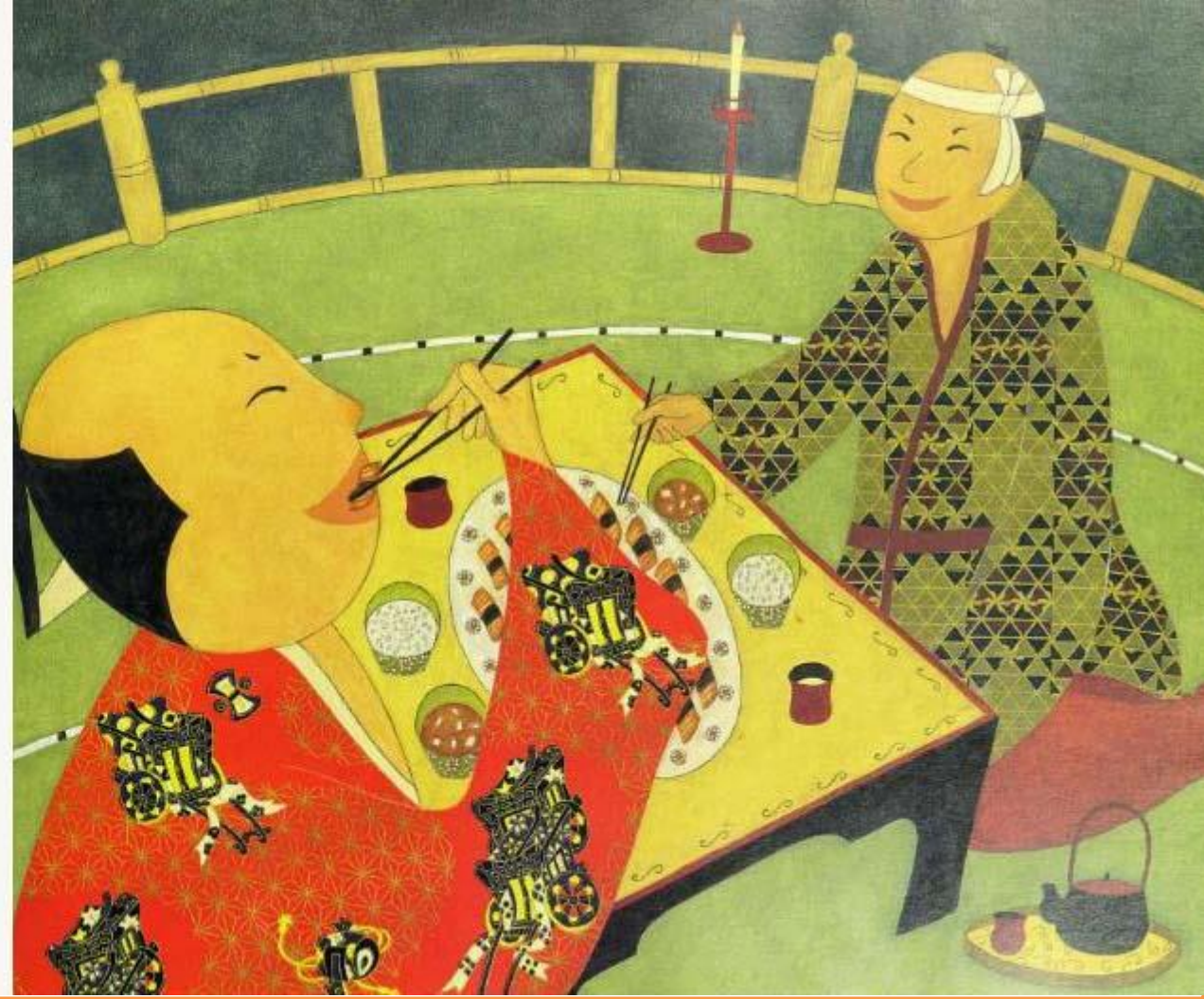

उस दिन के बाद से योस्ही हर दिन लोगों के लिए साबू की हिबाची के पास नृत्य करता था.

और हर दिन शाम के समय दोनों पड़ोसी योस्ही के बरामदे में बैठ कर प्रसन्नता से साबू को भुनी हुई गरमागरम ईल मछलियों का आनन्द लेते थे और खूब हँसते थे.